

IPBES ट्रांसफॉरमेटिवि चेंज असेसमेंट

प्रलिस के लयि:

आईपीबीईएस, संयुक्त राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम, कार्बन-तटस्थता, राष्ट्रीय जैवविधिता कार्य योजना (एनबीएपी), स्वच्छ भारत अभियान, जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना ।

मेन्स के लयि:

जैवविधिता संरक्षण, स्थिरता के लयि शासन, पर्यावरण संरक्षण के लयि सार्वजनिक नीतयिँ

[स्रोत: IPBES](#)

चर्चा में क्योँ?

‘जैवविधिता और पारस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लयि अंतर-सरकारी वजिज्ञान-नीतमिंच’ (IPBES) द्वारा जारी रिपोर्ट, जसिका शीर्षक [जैवविधिता की हानि को कम करने में शासन की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर ज़ोर देती है](#) ।

- यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि समावेशिता और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करने वाला प्रभावी शासन, जैवविधिता को संरक्षित करने और दीर्घकालिक, प्रणालीगत परिवर्तन को आगे बढ़ाने के लयि कतिना आवश्यक है ।

ट्रांसफॉरमेटिवि चेंज असेसमेंट रिपोर्ट के मुख्य बडि क्या हैं?

- पारस्थितिकी हानि: रिपोर्ट में जैवविधिता की हानि को रोकने के लयि समाज द्वारा प्रकृति के साथ कयि जाने वाले व्यवहार में मूलभूत बदलाव की त्वरित आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है तथा चेतावनी दी गई है कि निषिक्रयिता से अपरिवर्तनीय पारस्थितिकी क्षति हो सकती है, जसिमें प्रवाल भित्तयिँ और वरषावनों का वनिाश भी शामिल है ।
- आर्थिक और रोजगार के अवसर: तत्काल कार्रवाई से वर्ष 2030 तक वैश्विक स्तर पर 10 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के व्यावसायिक अवसर तथा 395 मिलियन रोजगार उत्पन्न हो सकती हैं, वशिष रूप से उन उद्योगों में जो प्रकृति पर अत्यधिक निर्भर हैं ।
- जैवविधिता हानि के कारण: रिपोर्ट में मूल कारणों की पहचान लोगों और प्रकृति के बीच संबंध वच्छेद, प्रकृति तथा अन्य पर प्रभुत्व के रूप में की गई है ।
 - अन्य कारणों में शक्ति और धन का संकेंद्रण तथा दीर्घकालिक स्थिरता की तुलना में अल्पकालिक भौतिक लाभ को प्राथमिकता देना शामिल है ।
- परिवर्तन हेतु पाँच प्रमुख रणनीतयिँ:
 - संरक्षण एवं पुनरुद्धार: जैव-सांस्कृतिक विधिता के कषेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना, जो पर्यावरणीय पुनरुद्धार को सांस्कृतिक मूल्यों के साथ जोड़ते हैं, जैसे नेपाल में समुदाय-संचालित वन प्रबंधन ।
 - प्रमुख कषेत्रों में व्यवस्थित परिवर्तन: कृषि, मत्स्य पालन और बुनियादी ढाँचे जैसे कषेत्र, जो जैवविधिता हानि में योगदान करते हैं, को स्थायी प्रथाओं के माध्यम से संबोधित करना ।
 - आर्थिक प्रणालयिँ में परिवर्तन: हार्मफुल सब्सिडी में सुधार और सतत व्यापार मॉडल को बढ़ावा देकर प्रकृति-सकारात्मक अर्थव्यवस्थाओं की ओर रुख करना ।
 - अनुकूली शासन: स्वदेशी समुदायों सहित विविध हतिधारकों को एकीकृत करने वाली अनुकूल शासन प्रणालयिँ को नरिमति करना तथा नीतयिँ में जैवविधिता को केंद्रित चिंता का वषिय बनाएं ।
 - अनुकूली शासन, बदलती पर्यावरणीय परिस्थितयिँ और नई जानकारी के आधार पर रणनीतयिँ के नरितर समायोजन को संक्षम बनाता है ।
 - यह लचीलापन जटिल जैवविधिता चुनौतयिँ से निपटने तथा उभरते खतरों के प्रति अनुक्रयाशील बने रहने के लयि महत्त्वपूर्ण है ।
 - दृष्टिकोण और मूल्यों में बदलाव: शक्ति, अनुभवात्मक गतिविधयिँ और विविध ज्ञान प्रणालयिँ को एकीकृत करने पर ज़ोर देते

हुए मानव-प्रकृति के अंतरसंबंध की मान्यता को बढ़ावा देना ।

IPBES

- वर्ष 2012 में स्थापित IPBES एक स्वतंत्र अंतर-सरकारी निकाय है जिसमें भारत सहित लगभग 150 सदस्य देश शामिल हैं ।
 - यह जैवविविधता, पारिस्थितिकी तंत्र तथा लोगों के लिये उनके योगदान पर वैज्ञानिक आकलन प्रदान करता है, साथ ही उनके संरक्षण तथा सतत् उपयोग के लिये उपकरण एवं तरीके भी प्रदान करता है ।
- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) IPBES को सचिवालय सेवाएँ प्रदान करता है । हालाँकि यह संयुक्त राष्ट्र का निकाय नहीं है ।
- सचिवालय: बॉन, जर्मनी ।

ट्रांसफॉर्मेटिव चेंज (परिवर्तनकारी बदलाव) क्या है और इसे किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है?

- ट्रांसफॉर्मेटिव चेंज (परिवर्तनकारी बदलाव): यह तकनीकी, आर्थिक और सामाजिक कारकों के बीच एक मौलिक, प्रणाली-व्यापी पुनर्गठन है, जिसमें प्रतमान, लक्ष्य तथा मूल्य शामिल हैं, जो जैवविविधता के संरक्षण एवं सतत् उपयोग के लिये और एक अच्छी गुणवत्ता वाले जीवन एवं सतत् विकास को प्राप्त करने हेतु आवश्यक है ।
- ट्रांसफॉर्मेटिव चेंज (परिवर्तनकारी बदलाव) हेतु कदम:
 - कार्बन-तटस्थ कार्यवाहियाँ: कार्बन-तटस्थता के लिये पर्याप्त करना, इसे व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकारों के लिये एक आदर्श बनाना, साथ ही वैध जलवायु-अनुकूल प्रतिसिंतुलन का समर्थन करना ।
 - भू-सकारात्मक वकिलप: आपूर्ति शृंखलाओं में बदलाव लाकर और नीतियों को प्रभावित करके लोगों के लिये पर्यावरण में सकारात्मक योगदान करना आसान, आनंददायक तथा कफायती बनाना ।
 - सब्सिडी में सुधार: पर्यावरणीय संरक्षण को समर्थन देने के लिये सब्सिडी और प्रोत्साहनों को पुनर्निर्देशित करना तथा संसाधन-नषिकरण उद्योगों से हटकर संधारणीय प्रथाओं की ओर संक्रमण को सुगम बनाना ।
 - एहतियाती नरिणय लेना: पर्यावरणीय खतरों को पूर्व सक्रियता से संबोधित करते हुए, यहाँ तक कि निश्चित प्रमाण के बगैर भी, एहतियाती, अनुकूली, समावेशी और अंतर-क्षेत्रीय नरिणय लेने को लागू करना ।
 - पर्यावरण कानूनों को सुदृढ़ बनाना: सुदृढ़ पर्यावरण कानूनों की वकालत करना, उनका सुसंगत क्रियान्वयन सुनिश्चित करना और प्रकृति की रक्षा करने तथा सतत् आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने वाली वैश्विक पहलों का समर्थन करना ।

//

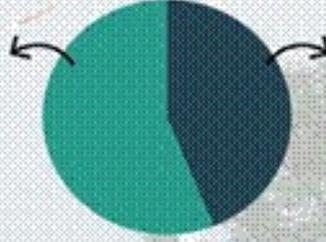


Record increase in India's RE Capacity

Surge in Solar Energy

Increase: 27.9%

Till Oct 2024
92.12 GW

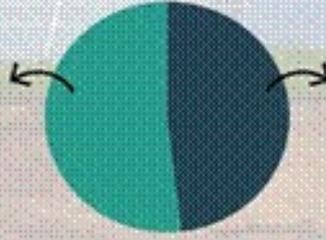


Till Oct 2023
72.02 GW

Surge in Wind Energy

Increase: 7.7%

Till Oct 2024
47.72 GW



Till Oct 2023
44.29 GW



mnreindia



mnreministry



mnre.gov.in

परिवर्तनकारी बदलाव के लिये भारत की पहल क्या हैं?

- राष्ट्रीय जैवविविधता कार्य योजना (NBAP)
- स्वच्छ भारत अभियान
- जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना
- हाइब्रिड और इलेक्ट्रिक वाहनों को तेज़ी से अपनाना तथा बनारिमाण (FAME)
- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (PMUY)
- मशिन लाइफ (पर्यावरण के लिये जीवनशैली)
- अटल शहरी कार्याकल्प एवं परिवर्तन मशिन (अमृत)
- परिवर्तनकारी परिवर्तन के लिये सतत् विकास लक्ष्य (SDG): ट्रांसफॉर्मेटिवि चेंज (परिवर्तनकारी बदलाव) के लिये सतत् विकास लक्ष्य (SDG) समावेशी विकास के माध्यम से सतत् विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो जल के नीचे जीवन, जलवायु कार्रवाई, स्वच्छ ऊर्जा, स्वच्छ जल, ज़मिमेदार उपभोग और भूमि पर जीवन को संबोधित करते हैं।
 - समार्ट सटी मशिन, ग्रीन इंडिया मशिन, स्वच्छ भारत अभियान, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना और राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा कोष जैसी भारत की पहल वभिन्न सतत् विकास लक्ष्यों के अनुरूप हैं।
 - भारत ने अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन के नेतृत्व में नवीकरणीय ऊर्जा में पर्याप्त नविश किया है, जिसका लक्ष्य वर्ष 2030 तक गैर-जीवाश्म स्रोतों से 500 गीगावाट बजिली उत्पन्न करना है।

?????? ???? ???? ????:

प्रश्न: ट्रांसफॉर्मेटिवि चेंज (परिवर्तनकारी बदलाव) की अवधारणा पर चर्चा कीजिये। जैवविविधता के नुकसान को दूर करने और सतत् विकास को प्राप्त करने के लिये इसे कैसे लागू किया जा सकता है?

UPSC सविलि सेवा परीक्षा वगित वर्ष के प्रश्न (PYQ)

????????

प्रश्न 1. नमिनलखिति में से कौन-से भौगोलिक क्षेत्र में जैवविधिता के लिये संकट हो सकते हैं? (2012)

1. वैश्विक तापन
2. आवास का वखिंडन
3. वदिशी जातिका संक्रमण
4. शाकाहार को प्रोत्साहन

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 2 और 3
- (c) केवल 1 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (a)

प्रश्न 2. जैवविधिता नमिनलखिति तरीकों से मानव अस्तत्व का आधार बनाती है: (2011)

1. मृदा नरिमाण
2. मृदा अपरदन की रोकथाम
3. अपशषिट का पुनरचकरण
4. फसलों का परागण

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर चुनयि:

- (a) केवल 1, 2 और 3
- (b) केवल 2, 3 और 4
- (c) केवल 1 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (d)

??????

भारत में जैवविधिता कसि प्रकार अलग-अलग पाई जाती है? वनस्पतजित और प्राणजित के संरक्षण में जैवविधिता अधनियिम, 2002 कसि प्रकार सहायक है? (2018)